21 / 12 / 83 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

तुरंत दान महापुण्य का रहस्य जान,
अपने जीवन में प्रैक्टिकल में लाने का अनुभव

➢➢ मैं शक्तिशाली समर्थ आत्मा

➳ _ ➳ स्मृति का स्विच आन करके

→ तीसरे नेत्र द्वारा

◆ बुद्धि रूपी टीवी में

• वतन का दृश्य देख रही हूँ

➳ _ ➳ अपने स्नेह के सम्बन्ध द्वारा

→ बुद्धि की स्पष्टता द्वारा

◆ बाबा को समीप और सम्मुख

• अनुभव कर रही हूँ

➳ _ ➳ वतन में बैठे हुए हैं ब्रह्मा बाप

→ 'मेरे बच्चे, मेरे बच्चे' कहते हुए

◆ बच्चों के सम्पूर्ण और संपन्न

• बनने के इन्तजार में

➳ _ ➳ मैं ब्रह्मा मुख वंशावली

→ ब्राह्मण आत्मा

◆ साकार पालना का

• अनुभव कर रही हूँ

➳ _ ➳ ब्रह्मा बाबा के नयनों में समाई हुई

→ मैं उनकी विशेष बच्ची

◆ उनके विशेष स्नेह का

• अनुभव कर रही हूँ

➳ _ ➳ बाबा अपने गुणों और शक्तियों को

→ मुझे ट्रान्सफर कर रहे हैं

◆ 'सदा तीव्र पुरुषार्थी भव'

◆ 'सदा शक्तिशाली आत्मा भव'

• का वरदान दे रहे हैं

➢➢ 'तुरंत दान महापुण्य' इस स्लोगन को

➳ _ ➳ सदा स्मृति में रख

→ हर समय हर कर्म का

◆ श्रेष्ठ और ताजा फल खा रही हूँ

- और तंदुरुस्त बन रही हूँ

➳ _ ➳ जो भी श्रीमत समय प्रमाण

➳ _ ➳ जिस रूप से मिलती है

→ उसी वेला में उसी उमंग से

→ प्रैक्टिकल में लाकर

◆ सेवा का ताजा मेवा खा रही हूँ

- शक्तिशाली आत्मा बन
- स्वत: ही तीव्रगति में चल रही हूँ

➳ _ ➳ कर लेंगे, हो जायेंगे

→ ऐसे सोचते-सोचते

◆ ताजे को सूखा फल

- नहीं बनाती हूँ

➳ _ ➳ ब्रह्मा बाप और जगत-अम्बा की

→ विशेषताओं को सामने रख

◆ फालो फादर और फालो मदर कर

- तुरंत दानी महापुण्य आत्मा बन
- पुण्य का श्रेष्ठ फल खा रही हूँ

➳ _ ➳ ब्रह्मा बाप के संकल्प को

→ साकार में लाकर

◆ सदा की शक्तिशाली

◆ सदा की तीव्र पुरुषार्थी

◆ सदा उड़ती कला वाली बन

- बार-बार की मेहनत से छूट रही हूँ

◆ सम्पूर्णता की मंजिल की ओर

- तीव्रगति से बढ़ रही हूँ